REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2018

अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में मलिक काफूर का प्रथम देवगिरी एवम् वारंगल अभियान – एक संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
(प्राचार्य) एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
(सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़) गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)

प्रस्तावना :

अलाउद्दीन अपने साथ एक अधिकारी विशेष रूप से दास अधिकारी रखने के लिये इच्छुक था, जो राजतन्त्र से उत्पन्न होने वाले अकेलेपन में साथ न छोड़े। यह स्थान अलाउद्दीन ने मलिक काफूर को दिया। यह आवश्यक था कि अलाउद्दीन का कृपापात्र अधिकारी एक ऐसा व्यक्ति हो जिसकी क्षमता और निपुणता को चुनौती न दी जा सके। काफूर ने कुबक के विरूद्ध अभियान में बड़ा सराहनीय कार्य किया था। सुल्तान आलाउद्दीन ने दक्षिण विजय अभियानों के लिये काफूर को योग्यतम मानकर सेनानायक बनाकर भेजने का निश्चय किया।

काफूर का देवगिरी का प्रथम अभियान–

सुल्तान अलाउद्दीन ने निश्चय किया कि चुने हुए 30,000 सैनिकों की सेना मलिक काफूर की कमान में देवगिरी अभियान के लिए भेजी जाये। फरिश्ता के अनुसार सुल्तान ने काफूर को अन्य सैन्य अधिकारियों से उच्च स्तर पर रखने के लिये निश्चित कदम उठाये। शाही छत्र और चौकी उसके साथ भेजे गये। अधिकारियों को यह आदेश दिये गये कि वे प्रतिदिन उसका अभिवादन करते रहें और उससे अपने लिये आदेश प्राप्त करते रहें। सुरक्षामन्त्री सिराजुद्दीन ख्वाजा हाजी को जो परिश्रमी और निपुण व्यक्ति था, सेना का तात्कालिक अधिकारी नियुक्त किया गया। आइन मुल्क मुल्तानी और अलप खॉ को आदेश दिये गये कि काफूर को हर सम्भव सहायता देकर उसे शिकायत का अवसर न दें।[1] अलाउद्दीन ने सन् 1308 ई0 में मलिक नायब काफूर को एक विशाल सेना के साथ देवगिरी पर आक्रमण करने और रामदेव से बकाया कर बसूल करने हेतु भेजा।[2]

इसी समय जब काफूर दक्षिण विजय पर जा रहा था, अलाउद्दीन की पत्नी कमला देवी ने अपनी एकमात्र जीवित पुत्री देवल देवी को दिल्ली लाये जाने की इच्छा प्रकट की। इसी कारण अलाउद्दीन ने काफूर को देवलदेवी को उसके पिता राजा करण से छीन कर दिल्ली लाने की आज्ञा दी।[3] खजायन–उल–फुतूहु से हमें सूचना मिलती है कि अलाउद्दीन ने काफूर को यह आज्ञा दी कि राय और उसके परिवार के किसी व्यक्ति को हानि न पहुॅचायी जाये वास्तव में इन आदेशों का पालन किया गया।[4]

मलिक काफूर दक्षिण की ओर चला उसके साथ अलप खॉ और आइन उल मुल्क मुल्तानी भी जा मिले। मालवा पार करने के पश्चात् काफूर ने रामकरण को अपनी पुत्री सोंपने के लिये या शाही सैनिकों का मुकाबला करने के लिये तैयार रहने के लिये संदेश भेजा। करण बघेल ने इस अपमानजनक विकल्प को ठुकरा दिया और प्रतिरक्षा के लिये तैयार हो गया। मलिक नायब काफूर ने अलप खॉ को उसकी सेना के साथ बगलाना के पर्वतों से होकर बढ़ने और राजकुमारी को अधिकृत करने के लिये भेजा और काफूर स्वयं देवगिरी की ओर बढ़ा। दो महीने तक रामकरण ने मुकाबला किया और मार्ग प्राप्त करने के अलप खॉ के सारे प्रयत्नों को उसने विफल कर दिया। बघेल राजा को संकटपूर्ण परिस्थितियों में देखकर सिंघंनदेव ने पुनः विवाह का प्रस्ताव रखा और वधु को देवगिरी लाने हेतु अपने छोटे भाई भिल्लम को भेजा राजपूत

राजा ने अपनी असहाय स्थिति देखकर भिल्लम के अन्तर्गत कुछ रक्षकों के साथ राजकुमारी को देवगिरी रवाना कर दिया।

एक दिन जबकि शाही सेना में राजा करण का पीछा कर रही थी लगभग 300 मुस्लिम सैनिक अपने नायक से अनुमति लेकर ऐलोरा की प्रसिद्ध गुफाओं का भ्रमण करने निकले। एकाएक उन्होंने अपने ओर बढ़ती हुयी एक सैनिक टुकड़ी देखी। उसे भगोड़े करण की टुकड़ी समझकर वे उन पर टूट पड़े और भयानक संघर्ष प्रारम्भ हो गया। ये सैनिक रामकरण की सेना के नहीं बल्कि सिंघन की भावी पत्नी देवलरानी के रक्षक थे। एक तीर देवलरानी के घोड़े को लगा और वह भूमि पर गिर पड़ी। आक्रान्ता सैनिकों ने तुरंत उसे घेर लिया किन्तु यह बताये जाने पर कि वह देवलरानी है जिसकी खोज में हैं। वे उसे अपने नायक के पास ले गये।[5] ऐसी नाटकीय परिस्थितियों में देवलरानी की प्रप्ति ने अलप खॉ का हदय हर्ष से भर दिया राजकुमारी को शाही हरम में प्रविष्ट करने के लिये दिल्ली भेज दिया गया। जहॉ उसके जीवन का विषादमय और दुर्भाग्यपूर्ण अन्त हुआ।[6]

अलप खॉ रामदेव के विरूद्ध मलिक नायब काफूर से मिलने के लिये बढ़ा। मार्ग में और राजधानी में लूटमार और विनाश करता हुआ मलिक काफूर देवगिरी पहुॅचा। ऐसा प्रतीत होता है कि रामचन्द्र आक्रमण के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था किन्तु आक्रांता का प्रतिरोध करने हेतु उसने किसी प्रकार एक निर्बल सेना एकत्र कर ली। युद्ध में वह पूर्णतः पराजित हुआ किन्तु उसका पुत्र जो शत्रु को समर्पण के इच्छुक नहीं था, अपने अनेक अनुयायियों के साथ युद्ध भूमि से भाग खड़ा हुआ।[7]

राजा रामचन्द्र ने संधि की इच्छा व्यक्त की मलिक काफूर ने कुछ हाथी और प्रचुर सम्पत्ति प्राप्त की और व्यक्तिगत रूप से सुल्तान के प्रति भक्ति प्रकट करने के लिये उसने रामदेव उसके परिवार और उसके सम्बन्धियों को दिल्ली भेज दिया।[8]

अलाउद्दीन अपने सेनानायक की सफलता पर बड़ा प्रसन्न हुआ, उसने रामदेव का दयापूर्वक स्वागत किया और उसके लिये राजधानी में राजसी सुविधाओं की व्यवस्था कर दी। इस प्रकार उसने दक्षिण भारत में एक निष्ठावान मित्र बना लिया। 6 माह के उपरान्त रामचन्द्र को अपने राज्य को लौटने की अनुमति दे दी गयी और राय रायन की पदवी और एक चन्दोवा देकर उसे सम्मानित किया गया। इन सम्मानों के साथ–साथ यादव राजा को एक लाख सोने के टके दिये गये और नवसारी का जिला उसके राज्य में सम्मिलित कर दिया गया।[9]

वारंगल अभियान–

सुल्तान ने पूर्व आक्रमण की भॉति इस अभियान में भी काफूर को सैन्य संचालन, अनुशासन, सन्धि आदि के विषय में विस्तारित आदेश दिये। सुल्तान चाहता था कि काफूर प्रताप रूद्रदेव की सम्पत्ति प्राप्त करे और जरूरत से ज्यादा शक्ति प्रदर्शन न करे। सुल्तान ने निर्देशित किया कि वह एक अपरचित देश में जा रहा है, और इसलिये उसे अत्याधिक हठी और उद्दण्ड नहीं होना चाहिये। उसे मलिक सिराजुद्दीन आरिज–ए–मुमालिक और अन्य महत्वपूर्ण अधिकारियों के साथ सहयोगपूर्ण कार्य करना चाहिये। उसे सैनिकों से नम्रता का व्यवहार करना चाहिये और विद्रोह का कोई कारण उपस्थिति नहीं होने देना चाहिये, उसे सैनिकों के छोटे–मोटे दुराचरण और उपद्रवी व्यवहार पर भी ध्यान न देने की सलाह दी गयी। यदि कोई सैनिक नया घोड़ा या कर्ज चाहता है तो उसे खुशी से देना चाहिये। संक्षेप में उसे अधिकारियों और सैनिकों के प्रति इतना नम्र भी न होना चाहिये कि वे दुष्ट और अवज्ञाकारी हो जायें और उसे इतना कठोर भी न होना चाहिये के वे शत्रु बन जाये। जहॉ तक वारंगल के राजा से किये जाने वाले व्यवहार का संबंध है मलिक काफूर को दुर्ग अधिकृत करके राजा को अपदस्थ करने की सलाह दी गयी और कहा गया कि यदि राजा प्रताप रूद्रदेव अपना कोष और अपने हाथी समर्पित करने और तदन्तर वार्षिक कर देने को तैयार हो जाता है तो शाही सेनानायक को अधिक के लिये जोर नहीं देना चाहिये जिससे कहीं राय निराश होकर प्रतिरोध करने को तैयार न हो जाये। यदि वह वारंगल का सारा कोष और सारे हाथी प्राप्त करने में सफल हो जाता है तो राय को उससे (मलिक नायब से) भेंट हेतु आने के लिये दबाव नहीं डालना चाहिये। अपने नाम और यश के लिये उसे राय को अपने साथ दिल्ली नहीं लाना चाहिये।[10]

ये अनुदेश पाकर मलिक काफूर ने लाल चन्दोबे और एक विशाल सेना के साथ 31 अक्टूबर 1309 को दक्षिण की ओर तेलंगाना राज्य को जिसकी राजधानी वारंगल थी विजित करने हुतु दिल्ली से प्रस्थान किया। अपने ही जैसी बेगबान नदियों को और अनेक पहाडी क्षेत्रों को पार करते हुये चन्देरी होकर पुराने मार्ग पर आगे

बढ़ा।[11] मार्ग में अनेक राजा और प्रान्तपति काफूर की सेनाओं से जा मिले, पन्द्रह दिन के पश्चात् सेना इरिजपुर जिसका दूसरा नाम सुल्तानपुर भी है पहुॅची।[12] मलिक नायब देवगिरी को जाने वाले

मार्ग से पहले से परिचित था। वह वारंगल जाते सीधा उस राज्य की ओर बढ़ा। सेना दिसम्बर 1309 के प्रथम सप्ताह में खण्डा जा पहुॅची वह 15 दिन ठहरी।[13] अगली यात्रा में सेना एक स्थान पर जिसे अमीर नीलकण्ठ कहता है और जो कहा जाता है कि यह देवगिरी की सीमाओं पर स्थित था पहुॅची।[14] वहॉ से सेना शान्तिपूर्वक आगे बढ़ी क्योंकि बजीर काफूर ने सम्राट के आदेशों के अनुसार कार्य करते हुये सैनिकों को उस प्रदेश में लूटमार नहीं करने दी और सेना दिल्ली सल्तनत के एक मित्र राय रामदेव के प्रदेश से होकर गुजर रही थी।[15] उस समय रामचन्द्र ने अपनी ओर से शाही सेनाओं की सारी सुविधाओं का ध्यान रखा देवगिरी का समस्त बाजार सैनिकों के लिये खुलवा दिया गया जिससे सैनिक सस्ते दरों पर आवश्यक सामान क्रय कर सकें।[16]

रामचन्द्र ने अपनी मराठा सैनिकों की टुकड़ियॉ भी मुस्लिम सेना के साथ कर दीं और आगे बढ़ती हुयी सेना की खाद्य सामग्रियों और अन्य आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था कर दी। वह स्वयं मलिक काफूर के साथ कुछ दूर तक गया और फिर देवगिरी वापिस लौट आया।[17] अमीर खुसरो उन अनेक स्थानों के नाम देता है, जहॉ से होकर शाही सेना गुजरी थी किन्तु इन्हें अब पहचानना कठिन है यह निश्चित है वह बसीरगढ़ के (वेरागढ़) के सोने के खान वाले जिले से होकर गुजरी।[18] देवगिरी से निकलकर तेलंगाना की सीमाओं पर प्रवेश करते समय मार्ग में शहरों और ग्रामों को उजाडना प्रारम्भ कर दिया। उसने सिरपुर के किले को जो तेलगांना राज्य में उत्तर की ओर था घेर लिया[19] घिरे हुये पक्ष ने वीरता से युद्ध किया किन्तु भयंकर आंक्रमण का प्रतिरोध करने में अपने को असमर्थ पाकर उन्होंने अपने स्त्री बच्चों के लिये अपमान की अपेक्षा अग्निज्वालाओं को और स्वंय के लिये घृणित समर्पण की अपेक्षा समर भूमि में गौरवशाली मृत्यु को अधिक पसंद किया। किले के अधिपति (मुकद्दम) संभवतः युद्ध में मारा गया और उसके भाई को जिसे खुसरो अन्नानुर कहता है उस वायदे पर किले का भार सौंप दिया गया कि वह भविष्य में आज्ञापालन करेगा।[20]

13 जनवरी को सेना ने वारंगल की ओर प्रस्थान किया।[21] एक हजार घुड़सवारों की टुकड़ी अलग करके निरीक्षण दल के रूप में आगे भेज दी गयी इसने हनमुआ कोंडा (खुसरो का अनमकिण्डा) की पहाड़ी को अधिकृत कर लिया जहॉ से दक्षिण में स्थित वारंगल के सारे भवन और उद्यान दिखते थे।[22]

वारंगल का दुर्ग पत्थर का बना था किन्तु वह मिट्टी की एक मौटी दीवार से घिरा था जो सम्भवतः पत्थर की दीवार से भी मजबूत थी। वह दक्षिण भारत के प्रबलतम दुर्गों में से एक था। किले के आस–पास अपने तम्बू गाड़ने से पूर्व मलिक काफूर ने दो बार उसका निरीक्षण किया और घेरा डाले जाने की आज्ञा दी।[23]

अमीर खुसरो अपनी चित्रमयी शैली में घेरे का वर्णन करता है– 15 शबान 18 जन0 1310 को ख्वाजा नसीरूत मुल्क सिराजुद्दोला ने एक मशाल लेकर स्वयं सैनिकों को व्यवस्थित किया। प्रत्येक टुकड़ी को किला घेर लेने और शत्रुओं की अग्नि से घेरा डालने वालों की रक्षा करने हेतु उनके नियत स्थान पर भेज दिया गया। प्रत्येक तुमन को एक हजार दो सौ गज भूमि दी गयी। तम्बुओं द्वारा घिरी किले की कुल परिधि 12 हजार 5 सौ 46 गज थी।[24] दूसरी ओर किले के सभी कंगूरों पर वीर राय नियुक्त किये गये। पत्थर एकत्रित किये गये जिन्हें पत्थर नहीं मिले उन्होंने ईट और छोटे खग नीचे घेरा डालने वालों पर फैंके। जब घेरा डालने वाला पक्ष उस मार्ग पर मड़रा रहा था[25] तभी उसी प्रदेश के एक सरदार विनायक देव (खुसरो का बनिक देव) ने चॉदनी रात में एक हजार सैनिकों सहित आक्रमण किया किन्तु वह बुरी तरह असफल रहा। दोनों पक्षों के अनेक सैनिक खेत रहे।[26] इसी समय वाम भाग के मलिक कराबेग ने पड़ोस पर छापा मारा और कुछ हाथी अधिकृत कर लिये।[27]

खाई भरने का कार्य तीव्रता से प्रारम्भ हो गया। मिट्टी, पत्थर और अन्य वस्तुये फैंककर खाई एक स्थान पर भर दी गयी और मुस्लिम सेना किले की बुर्जियों तक पहुॅच गयी। मलिक काफूर ने अधिकारियों की एक बैठक बुलाई। सभी सेनानायक इस बात से सहमत थे कि किले की दीवारों पर आक्रमण हेतु पाशेब का निर्माण करना कठिन कार्य है। फरवरी के मध्य तक बाहरी दीवारों पर बलशाली खोदने वालों द्वारा एक दरार बना डाली गयी। सप्ताह भर के अनवरत और प्रबल प्रयत्नों के पश्चात् मिट्टी का बाहरी किला अधिकृत कर लिया गया और भीतर के किले का घेरा प्रारम्भ किया।[28]

एक महीने से अधिक समय तक सुल्तान को मलिक काफूर का कोई समाचार नहीं मिला क्योंकि मार्ग में जो डाक चोकियॉ स्थापित की गयीं थीं वह शत्रु कार्यवाहियों के कारण अव्यवस्थित हो गयी थी। अत्यन्त व्यग्र होकर अलाउद्दीन ने बयाना के काजी मुगीसुद्दीन को उस समय के एक प्रतिष्ठित संत शेख निजामुद्दीन औलिया के पास सेना की स्थिति के संबंध में जानने के लिये भेजा। निजामुद्दीन ने यह कहकर बहुत उत्साहपूर्वक उत्तर दिया कि वह इस समय न केवल सफलता की आशा कर रहा है बल्कि भविष्य में भी विजयों की आशा कर रहा है। सुल्तान संत के कथन से बहुत प्रसन्न हुआ और परिस्थितियों के विलक्षण संयोग से काफूर की वारंगल विजय का समाचार भी उसी दिन पहुॅचा।[29]

भीतर का किला पत्थर का बना हुआ था। पत्थर इस कुशलता से जमाये गये थे कि उनके बीच में कोई सूई भी न जा सकती थी उसकी दीवार इतनी चिकनी थी कि उस पर से मक्खी भी फिसल जाती थी। जब सेना किले की खाई तक पहुॅची तो उसने देखा कि किले की खाई में पानी भरा हुआ है।[30]

आक्रमकर्ता सोच रहे थे कि नौकाओं के बिना खाई कैसे पार करें कि उसी समय युद्ध समाप्त हो गया क्योंकि राय रूद्रदेव ने जो अपनी पैतृक सम्पत्ति की रक्षा भारतीय सांप की भॉति कर रहा था आत्मसमर्पण का निश्चय किया।[31]

राय ने आत्म समर्पण द्योतक सोने की मूर्ति बनवाई गर्दन में सोने की जंजीर डाली गयी और अपने दूतों द्वारा शाही सेना के सेनापति के पास भेज दी।[32] अमीर खुसरो यह भी कहता है कि मलिक काफूर ने अलाउद्दीन की सलाह के अनुपालन में राय से उसकी सारी सम्पत्ति की मांग की और धमकी दी यदि उसने अपने लिये कुछ छिपाया तो नगर की समग्र जनसंख्या का संहार कर दिया जायेगा।[33]

यह शर्त निश्चित की गयी कि वह सभी खजाना, हाथी, घोड़े, जवाहरात और बहुमूल्य वस्तूयें जो कि वर्तमान में हैं उपस्थित कर देना। प्रत्येक वर्ष निश्चित धन सम्पति तथा हाथी सरकारी खजाने में देहली भेजा करेगा। मलिक नायब ने उससे संधि कर ली और पत्थर के किले पर अधिकार न जमाया। वर्षो से एकत्रित किया हुआ खजाना 100 हाथी, 7 हजार घोड़े, जवाहरात तथा बहुमूल्य वस्तुऍ प्रताप रूद्रदेव से प्राप्त की और उससे लिखवा लिया कि वह भविष्य में धन सम्पत्ति तथा हाथी भेजा करेगा।[34]

राय द्वारा समर्पित मूल्यवान पत्थरों में प्रसिद्ध कोहिनूर भी था जो खफी खॉ और परवर्ती लेखकों के अनुसार मलिक काफूर द्वारा दक्षिण से लाया गया था।[35]

संधि की शर्तों के संबंध में बरनी और खुसरो के अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णनों के बावजूद भी ऐसा प्रतीत होता है कि भीतरी किले ने समर्पण नहीं किया और न स्वयं प्रताप रूद्रदेव मलिक काफूर के समक्ष आज्ञाकारिता प्रकट करने के लिये गया था। केवल उसके दूत जो संधि की शर्तों को निर्धारित हेतु गये थे, शाही चंदोवे के समझ चुके थे।[36]

इसामी कहता है कि संधि की शर्तें तय हो जाने के पश्चात् जवाहरातों से जड़ी हुयी एक खिलअत किले के भीतर रूद्रदेव को भेजी गयी।[37] इसके प्रकाश में अमीर खूसरो का यह कथन कि राय प्रताप रूद्र को जो कुछ भी उसके देश में था, सब यहॉ तक कि किले की अन्तिम कील भी समर्पित करने के लिये बाध्य किया गया, विश्वसनीय प्रतीत नहीं होता। साथ ही राय ने वास्तव में जो कुछ समर्पित किया वह सम्भवतः उसकी पूरी सम्पत्ति के तुल्य नहीं हो सकता था। जो भी हो एक समकालीन हिन्दू लेखक विश्वनाथ कविराज ने उचित ही कहा है कि सुल्तान अलाउद्दीन के साथ युद्ध या शान्ति करने में शायद ही कोई अंतर पड़ता था पहले में मृत्यु मिलती थी और दूसरे में जो कुछ भी होता वह हाथ से चला जाता।[38]

मार्च 1310 में उपर्युक्त लूट का माल लेकर मलिक काफूर देवगिरी, धार, झायन, होता हुआ देहली वापिस पहुॅचा। अपने पहुॅचने से पूर्व सुल्तान की सेवा में वारंगल विजय पत्र भेज दिये।[39] विजय का समाचार प्राप्त होने पर उत्सव मनाये गये। सफलता के सुखद समाचार मस्जिदों में मिम्बरो से पढ़े गये। 23 जून 1310 (24 मुहर्रम 710 हि0) को चबुतरा–ए–नासिरी के सासने एक काले शामियाने के नीचे सुसज्जित दरबार में विजयी बजीर का स्वागत किया गया तथा अन्य सरदारों को भी पुरूस्कृत किया गया।[40] एक हजार ऊॅटों पर लदे कोष का निरीक्षण किया गया। यह व्यवस्था की गयी कि जन साधारण भी कोष को देख सके।[41]

अन्ततः वारंगल से लौटने पर मलिक काफूर दक्षिण भारत से अच्छी तरह परचित हो गया था। उसने अलाउद्दीन को बताया कि जब वह वारंगल में था तब उसने सुना था माबर के राजा के पास 500 विशाल

हाथी हैं। अलाउद्दीन भारत के सुदूरतम् कोनों में अपनी पताका फहराती देखने का अपने वजीर से भी अधिक उत्सुक था, उसने मलिक नायब काफूर को एक और अभियान का नायक बनाकर भेजने का पहले ही निर्णय कर लिया था। अभियान भेजने का वही उद्देश्य होता है, जो पिछले दो अभियानों का था।

अर्थात कोष और हाथी प्राप्त करना। किन्तु अमीर खुसरो कहता है– "अब एक पवित्र उद्देश्य के साथ" सम्राट ने दक्षिण को एक अभियान भेजने का विचार किया जिससे शरियत का प्रकाश वहॉ पहुॅच सके।[42]

सन्दर्भ–

1. "दिल्ली सल्तनत", मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी कृत, प0–337।
2. फरिश्ता के अनुसार यह अभियान 1306 में अमीर खुसरो के अनुसार मार्च 1307 में और बरनी के अनुसार 1308 के लगभग भेजा गया। फरिश्ता लिखता है कि सेवाना की विजय उसी वर्ष सम्पन्न हुयी थी जिस वर्ष देवगिरी के अभियान भेजा गया था अमीर खुसरो भी इस अभियान के पश्चात् ही सेवाना की विजय का वर्णन करता है। फरिश्ता के अनुसार सेवाना 1308 में अधिकृत किया गया था खुसरो के अनुसार 1310 में यह तिथियॉ उलझपूर्ण हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि समकालीन लेखक बरनी ठीक कहता है और 1308 का वर्ष सर्वाधिक विश्वसनीय है, क्योंकि यह सेवाना विजय के समीप है।
3. मध्यकालीन भारत, एल0पी0 शर्मा, पृ0 107।
4. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवं निजामी, पृ0 337।
5. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल कृत, पृ0 184।
6. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल कृत, पृ0 184।
7. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0–हबीब, पृ0 51–52।
8. हाजी उद्धवीर कहता है कि रामचन्द्र मलिक काफूर से मिला क्योंकि उसे अलाउद्दीन पर विश्वास था किन्तु काफूर ने उसे बंदी बना लिया और जो कुछ उसके पास था सब बताया, सुल्तान ने पराजित राजा के साथ दुर्व्यवहार करने के लिये उसे झिड़का और रामदेव को सम्मानित किया।
   इस कथन को अविश्वसनीय नहीं माना जा सकता बाद के अभियानों के समय काफूर को अलाउद्दीन के अनुदेश स्पष्टतः करते हैं कि अलाउद्दीन को पराजित राजाओं के प्रति काफूर के दुर्व्यवहार की आशंका थी।
9. बरनी, पृ0 326, फरिश्ता, पृ0 118।
10. बरनी, पृ0 327–328।
11. खजायन–उल–फुतूहु में जून (जमुना) चम्बल, कुवारी बिनास और मौजी लिखा है। जमुना त्रटिपूर्ण है, क्योंकि दक्षिण जाते समय इस पार करने की आवश्यकता नहीं थी चंबल और कुवांरी प्रसिद्ध नदियॉ हैं। बनास चंबल की एक शाखा है किन्तु यहॉ तात्पर्य सिंध से है जिसे सेना ने दक्षिण की ओर जाते समय चंबल के पास पार किया होगा मौजी निस्संदेह आधुनिक बेतवा है, जो भिलसा और चन्देरी के पास बहती है।
12. इरिज ग्वालियर से 65 मील दक्षिण पूर्व पर स्थित है, इसे गलती से ऐलिचपुर नहीं समझना चाहिये। (होडीवाला, पू0 252–53 भी)
13. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल कृत, पृ0 187।
14. यह स्थान पहचानना कठिन है क्योंकि यह दौलताबाद तथा सिरपुर के बीच कहीं स्थित है।
15. फरिश्ता, पृ0 119, खजायन–उल–फुतूहु, अनु0–हबीब, पृ0 58–59।
16. तारीख–ए–फिरोजशाही, बरनी, पृ0 328।
17. तारीख–ए–फिरोजशाही, बरनी, पृ0 329।
18. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल कृत, पृ0 187।
19. तारीख–ए–फिरोजशाही, बरनी, पृ0 329।
20. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल कृत, पृ0 188।
21. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 89।
22. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 188।
23. वही।

24. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0–हबीब, पृ0 63।
25. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 188।
26. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवं खलिक अहमद निजामी, पृ0 341।
27. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 96।
28. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 188।
29. तारीख–ए–फिरोजशाही, बरनी, प0 330–332।
30. खजायन–उल–फुतूहु, अमीर खुसरो, पृ0 105–106।
31. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवं खलिक अहमद निजामी, पृ0 342।
32. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0, सै0अ0अ0 रिजवी कृत, पृ0 105–106।
33. खिलजी वंश का इतिहास, के0एस0 लाल, पृ0 189।
34. तारीख–ए–फिरोजशाही, बरनी, पृ0 330।
35. लेनपूल "औरंगजेब", पृ0 150, ट्रेवर्नियर का ट्रवल्स, द्वितीय, अध्याय प्रथम, खजायन–उल–फुतूहु, अनु0हबीब, पृ0 77।
36. खजायन–उल–फुतूहु, अनु0–हबीब, पृ0 77।
37. फुतूहु–उस–सलातीन, इसामी, पृ0 283।
38. वैंकट रमैया में उल्लखित उपरोल्लिखित ग्रन्थ, पृ0 22।
39. तारीख–ए–फिरोजशाही, बरनी, कृत, पृ0 330।
40. इलाहाबाद विश्वविद्यालय पाण्डुलिपि (पृ0 56) जिलकदा 710 हि0 है जो मार्च अप्रैल 1310 के समतुल्य है, खजायन–उल–फुतूहु, के प्रो0 हबीब के अनुवाद में लिखित तिथि अधिक शुद्ध प्रतीत होती है, क्योंकि काफूर को दिल्ली पहुॅचने में एक या दो माह अवश्य लगे होंगे।
41. दिल्ली सल्तनत, मौ0 हबीब एवं खलिक अहमद निजामी, पृ0 343, चौतरा–ए–नासिरी, यह बदायूँ दबाजे के निकट स्थित था, तारीखे–फरिश्ता, पृ0 119।
42. खजायन–उल–फुतूहु, हबीब अनु0, पृ0 80।

सन्दर्भ ग्रथ सूची–

1. खजायन–उल–फुतूहु : अमीर खुसरो, अनु0–मौ0 हबीब।
2. तारीखे–ए–फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनु0–रिजवी।
3. खजायन–उल–फुतूहु : अमीर खुसरो, अनु0 सै0 अतहर अब्बास रिजवी।
4. तारीखे–ए–फरिश्ता : मुहम्मद आसिफ फरिश्ता, अनु0–जे0 ब्रिग्स।
5. तारीखे–ए–नासिरी : मुहम्मद विहमन्द खानी, अनु0–मौ0 जड़ी।
6. खिलजी वंश का इतिहास : डॉ0 के0एस0 लाल।
7. मध्यकालीन भारत : एल0पी0 शर्मा।
8. दिल्ली सल्तनत : मौ0 हबीब एवंम् खलिक अहमद निजामी।
9. ट्रेवल्स ऑफ मार्कोपोलो : कर्नल यूल।
10. स्टडीज इन इंडो–मुस्लिम हिस्ट्री : एस0एच0 होड़ीवाल।
11. औरंगजेब : लेनपूल।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
(प्राचार्य) एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,(सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़)
गुरूहरसहाय, फिरोजपुर. (पंजाब)